CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 10th Nov. 2020, Revised on 17th Nov. 2020, Accepted 19th Nov. 2020

शोध–पत्र

छात्रों के सम्पूर्ण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का योगदान

* डॉ. उषा शर्मा, *सहायक प्रोफेसर*
एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर
Email- ushasharma575@gmail.com, Mobile -7726847409

मुख्य शब्द – *व्यावसायिक अधिगम, सेवारत, प्रशिक्षणार्थी शिक्षक आदि।*

प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक तथा चारित्रिक आदि सभी पक्षों का विकास करना ही सर्वांगीण विकास कहलाता है।

केवल पाठयांश के द्वारा बौद्धिक अध्ययन से अथवा किसी भाषा विशेष अधिगम कौशलों के सम्पादन से ही सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है। अतः सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम के साथ–साथ पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं का होना आवश्यक है।

इसी उद्देश्य को लेकर विद्यालयों में खेलकूद, वाद–विवाद, नाटक, संगीत आदि की व्यवस्था होने लगी है। भारतीय शिक्षा पद्धति में प्राचीन काल से ही इन क्रियाकलापों का आयोजन होता था, परन्तु इस प्राकर का नाम नहीं दिया गया था। छात्रों की बौद्धिक शक्ति के विकास में जो स्थान शास्त्रीय विषयों का है, वही स्थान सम्पूर्ण विाकस के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं का है। कुछ समय पूर्व खेल–कूद, वाद–विवाद, नाटक, संगीत आदि क्रियाओं को अतिरित पाठ्यक्रम क्रियाएँ (Extra-carriculars Activities) माना जाता था। उस समय विद्यालय अधिकारी इनमें कोई रूचि नहीं रखते थे, उस समय इनका स्वागत नहीं वरन् इनको सहन किया जाता था। परन्तु इनके शैक्षिक, सामाजिक तथा छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में दिये गये वैयक्तिक योगदान ने इनको स्थापित किया।

आधुनिक काल में शिक्षा–शास्त्री इस बात पर सहमत हो गये है कि यदि इन क्रियाओं को समुचित रूप से पथ–प्रदर्शित किया जाये तो वह बड़े ही शिक्षक महत्व की सिद्ध होगी। आज इनको पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं (Co-Curricular Activities) के रूप में देखा जाता है तथा इनको पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग माना जाने लगा है। जो अनुभव या क्रिया शैक्षिक महत्व रखती हैं, वह पाठ्यक्रम का एक अंग है अतः ये क्रियाएँ वस्तुतः पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाएँ है।

पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ बालकों में सामाजिक, नैतिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करती हैं, समाज में उनकी भूमिका को स्पष्ट करती हैं, साथ ही बालकों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है।

शिक्षा का प्राचीन दृष्टिकोण छात्र के मानसिक विकास तक ही सीमित था। ऐसी अवधारणा थी कि मानसिक व्यायाम द्वारा ही मस्तिष्क का उचित विकास होता है और यही सफल जीवन के लिए उचित एवं आवश्यक है।

शनैः शनैः देश, काल परिस्थिति के अनुसार शिक्षा की धारण बदली तथा वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य छात्र का बहुमुखी एवं सर्वामीण विकास (All Rounder Development) करना है। यदि छात्र का व्यक्तित्व सन्तुलित बनाना है तो उसके मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक आदि सभी स्तरों को विकसित करना होगा। प्राचीन समय में तथ्य, ज्ञान एवं सूचनाओं को महत्व पर ध्यान दिया जाता था, आज भी इन तीनों के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जाता है। परन्तु इन तीनों का महत्व तभी है जब छात्र इनके माध्यम से चिन्तन करने में सक्षम हो सके। विभिन्न परिस्थितियों में इनका उपयोग कर सकें और अनुभवों का सामान्यीकरण करके अपनी लिए महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त कर जीवन को सफल बना सकें। अतः वर्तमान शिक्षा मुख्य उद्देश्य सुयोग्य मानव तैयार करना है।

शारीरिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और सुरक्षा सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों को शरीर के बनावट से ही परिचित नहीं कराया जाता अपितु उनके सन्तुलित शारीरिक विकास के लिए अनेक प्रकार के खेलों और व्यायामों का आयोजन किया जाता है। नागरिकता, चरित्र निर्माण, सहनशीलता, विनम्रता तथा व्यवहार कुशलता आदि प्रशिक्षण प्रदान कर छात्र के सामाजिक जीवन को सफल बनाने का प्रयास किया जाता है। इनके साथ ही छात्र के संवेगों को प्रशिक्षण द्वारा नैतिक भावनाओं के जागरण द्वारा उसमें नैतिकता के प्रति आस्था उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैः—

1. पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों में ज्ञानात्मक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों पर मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं के प्रति माध्यमिक स्तर के छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर आयोजित की जाने वाली पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के प्रति दिये गये सुझावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं—

1. पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों की ज्ञानात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों की मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं के प्रति माध्यमिक स्तर के छात्रों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।
4. माध्यमिक विद्यालय स्तर पर आयोजित की जाने वाली पाठ्यक्रम—सहगामी क्रियाओं के प्रति छात्र महत्वपूर्ण सुझाव देने में सक्षम होंगे (जिनका विश्लेषण करना संभव होगा)।

शोध विधि

शोध कार्य में प्रयुक्त होने वाले प्रविधि वर्णानात्मक या सर्वेक्षण प्रविधि पर ही दृष्टिपात किया जा रहा है।

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षाचार्य (M.Ed.) की अल्पावधि को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य को निम्न रूप से परिसीमित किया गया है—

1. शोधकर्ता ने जयपुर मण्डल के अन्तर्गत 10 माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया है।
2. प्रत्येक विद्यालय से 20—20 छात्रा शोध अध्ययन में शामिल किये गये हैं।

3. माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 9 के छात्रों को शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चुना गया।
4. इस प्रकार कुल 200 छात्रों के समूह पर यह अध्ययन किया गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में छात्रों के सर्वांगीण विकास के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानात्मक उपलब्धि और मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है।
6. पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन किया जायेगा तथा सुझावों का विश्लेषण होगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

''पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन''–संबंधित प्रश्नावली एवं अभिवृत्ति मापनी

अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन

प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या

ज्ञानात्मक उपलब्धि पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का प्रभाव

माध्यमिक स्तर के छात्रों पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का ज्ञानात्मक उपलब्धि पर प्रभाव देखने के लिए निम्न परिकल्पना बनाई गई थी–

''पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों की ज्ञानात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।''

इस परिकल्पना की जाँच करने के लिए प्रश्नावली के द्वारा आँकड़े एकत्रित किये गये हैं जिनसे प्राप्त परिणाम सारणी संख्या 1 में प्रदर्शित है। कुल छात्र छात्र संख्या 200 सारिणी संख्या 1 ज्ञानात्मक उपलब्धि पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रभाव के सन्दर्भ में छात्र मत–

सारणी संख्या 4.1

संख्या	सकारात्मक मत (हाँ)	प्राप्त %	नकारात्मक मत (नहीं)	प्राप्त %
1.	154	99%	46	17.5%
2.	165	82.5%	35	27.5%
3.	160	80%	40	20%
4.	130	65%	70	35%
5.	133	66.5%	67	33.5%
6.	150	75%	50	25%
7.	142	71%	58	29%
8.	139	69.5%	61	30.5%
9.	130	65%	70	35%
10.	122		78	

11.	160	69%	40	39%
12.	144	80%	56	20%
13.	142	72%	58	29%
14.	153	71%	47	21%
		76.5%		23.5%

उपर्युक्त सारणी के पश्चात् हम प्रत्येक प्रश्न/कथन के आधार पर विस्तृत व्याख्या एवं विश्लेषण करेंगे–

कथन/प्रश्न – 1 – पाठ्य सहगामी क्रियाओं से नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	**200**	**प्रतिशत (%)**
प्राप्त मत	200	
हाँ	152	77%
नहीं	46	23%

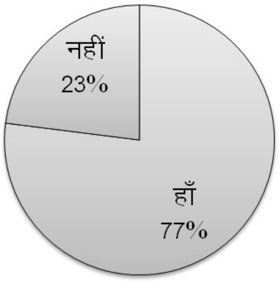

व्याख्या– प्राप्त परिणामों को देखने से ज्ञात हो रहा है कि इस प्रश्न के छात्रों से 154 मत हाँ में प्राप्त हुये है तथा नहीं में 46 मत अर्थात् 23% प्राप्त हुये है अर्थात् पाठ्य सहगामी क्रियाओं से छात्रों को नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है।

कथन–प्रश्न – 2 – इनकी सहायता से पढ़ाये जा रहे विषयों को समझने में सहायता मिलती है।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	**200**	**प्रतिशत (%)**
प्राप्त मत	200	
हाँ	165	82.5%
नहीं	35	17.5%

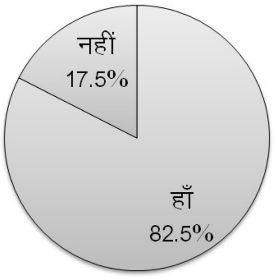

व्याख्या– प्राप्त परिणामों को देखकर ज्ञात हो रहा है कि इस प्रश्न के सकारात्मक पक्ष में 165 मत अर्थात् 82.5% तथा नहीं के पक्ष में 35 मत अर्थात् 17.5% परिणाम प्राप्त हुये है। जिससे सिद्ध होता है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के माध्यम से पढ़ाये जा रहे विषयों को समझने में सहायता मिलती है।

प्रश्न/कथन – 3 – इनके द्वारा सीखे–गये ज्ञान का प्रयोग किसी अन्य क्षेत्र में करना सम्भव होता है।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	160	80%
नहीं	40	20%

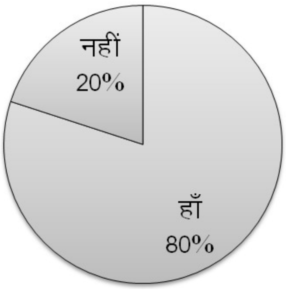

व्याख्या— प्राप्त परिणामों को देखकर ज्ञात हो रहा है कि इस प्रश्न के हाँ पक्ष में 160 मत अर्थात् 80% तथा नहीं पक्ष में 40 मत अर्थात् 20% मत प्राप्त हुये है। जिससे यह कहा जा सकता है कि छात्र–पाठ्य–सहगामी क्रियाओं द्वारा लिखे गये ज्ञान का प्रयोग अध्ययन के साथ–साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी कर सकते है। अतः ये क्रियाएँ छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी है। शेष 20% छात्रों को भी इससे जोड़ने का प्रयत्न किया जाये तो बेहतर परिणाम मिल सकेंगे।

प्रश्न/कथन – 4 – इनमें भाग लेने से सृजनात्मकता का विकास होता है।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	130	65%
नहीं	70	35%

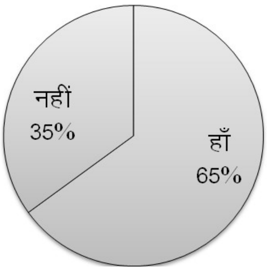

व्याख्या— पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने से छात्रों की सृजनात्मकता का विकास होता है यह मानना है 130 छात्रों का अर्थात् 65% जबकि 70 छात्र अर्थात् 35% मानते है कि इससे सृजनात्मकता का विकास नहीं होता है।

इस सम्बन्ध में शेष 35% छात्रों को भी यह समझना होगा कि यदि आज वे भी इनमें रूचि पूर्वक भाग ले तो सृजनात्मकता का विकास हो सकता है।

प्रश्न/कथन – 5 – इनसे साहित्यिक ज्ञान या भाषाज्ञान में वृद्धि होती है।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	133	66.5%
नहीं	67	33.5%

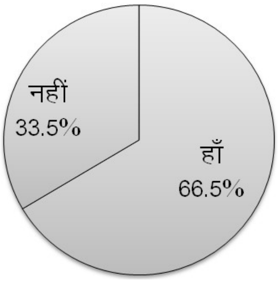

व्याख्या— प्राप्त परिणामों को देखकर यह स्पष्ट हो रहा है इस प्रश्न के पक्ष में 133 मत अर्थात् 66.5% है।

अतः हम कह सकते हैं कि ऐसे छात्रों का बहुमत है जो कि यह मानते है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के द्वारा साहित्यिक ज्ञान या भाषा ज्ञान में वृद्धि होती है।

मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर पाठ्यसहगामी क्रियाओं का प्रभाव

माध्यमिक स्तर के छात्रों पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं का मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर प्रभाव देखने के लिए निम्न परिकल्पना बनाई गई थी– ''पाठ्य सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों के मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।''

इस परिकल्पना की जाँच करने के लिए प्रश्नावली के द्वारा आँकड़े एकत्रित किये गये। जिनसे प्राप्त परिणाम सारिणी 2 में प्रदर्शित हैं।

सारिणी सं. 2 – मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रभाव में सन्दर्भ में छात्र मत–

प्रश्न/ कथन संख्या	सकारात्मक मत (हाँ)	प्राप्त %	नकारात्मक मत (नहीं)	प्राप्त %
15	130	65%	70	35%
16	150	75%	50	25%
17	118	59%	82	41%
18	180	90%	20	10%
I	120	66.6%	60	33.3%
II	60	33.3%	120	66.6%
19	190	15%	10	5%
I	100	52%	90	48%
II	90	48%	100	52%
20	160	80%	40	20%
I	80	50%	80	50%
II	50	31.25%	110	68.75%
III	30	18.75%	130	81.25%
21	180	90%	20	10%
I	160	88.88%	20	11.11%
II	140	77.78%	40	22.22%
22	170	85%	30	15%

I	170	100%	–	–
II	170	100%	–	–
23	160	80%	40	20%
24	150	75%	50	25%
25	156	78%	44	22%
26	146	73%	54	27%
27	148	74%	52	26%
28	142	71%	58	29%
29	140	70%	60	30%
30	159	79.4%	41	20.5%

उपर्युक्त सारणी 2 में मतों को जानने के बाद हम प्रत्येक प्रश्न/कथन के आधार पर विस्तृत व्याख्या एवं विश्लेषण करेंगे।

प्रश्न–15–कई प्रकार के शारीरिक कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं–

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	130	65%
नहीं	70	35%

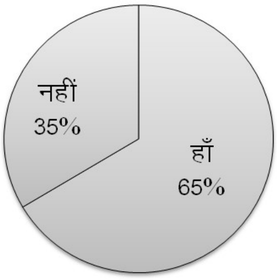

व्याख्या– प्रस्तुत कथन छात्र के मनोगत्यात्मक व्यवहार से लिया गया है। पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के द्वारा कई प्रकार के शारीरिक कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं ऐसा मत है। 130 छात्रों अर्थात् 65% मत है जबकि इसके विपक्ष में 35% मत हैं अतः अधिकतर छात्र मानते हैं इनके द्वारा शारीरिक कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

प्रश्न–16–व्यायाम (पी.टी./योगा) करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	150	75
नहीं	50	25:

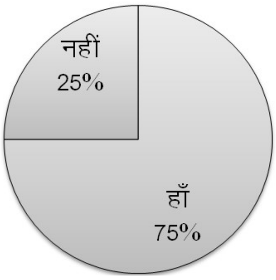

व्याख्या– उपर्युक्त परिणाम को दखेने से ज्ञात होता है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं से व्यायाम करने के अवसर प्राप्त होते हैं। क्योंकि 75% छात्रों का मत पक्ष में है शेष 25% छात्र सोचते हैं कि ऐसा नहीं होता है।

प्रश्न–17–व्यायाम करने से आपकी शारीरिक स्थिति में सुधार हुआ है।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	118	59%
नहीं	82	41%

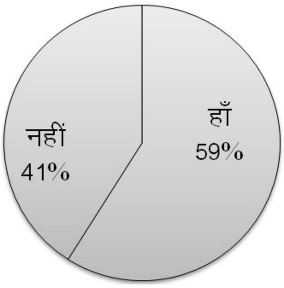

व्याख्या– परिणाम को देखने से ज्ञात होता है कि व्यायाम करने से छात्रों की शारीरिक स्थिति में सुधार होता है यह मानना है 59% छात्रों का जबकि 41% छात्र मानते है कि उनकी शारीरिक स्थिति कोई सुधार नहीं हुआ।

प्रश्न–18–नई–नई वस्तुओं (चार्ट। मॉडल। खिलौने आदि) को बनाने के अवसर प्राप्त होते हैं।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	180	80%
नहीं	20	20%

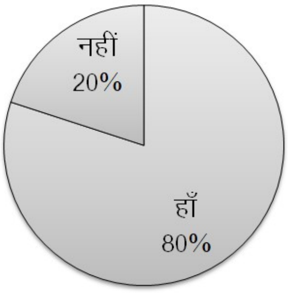

व्याख्या–पाठ्य–सहगामी क्रियाओं से नई–नई वस्तुओं जैसे–चार्ट/मॉडल/खिलौने आदि बनाने के अवसर प्राप्त होते हैं ऐसा 80% छात्र कहते हैं। शेष 20% छात्र को इन सबको बनाने का अवसर प्राप्त नहीं होता है।

इस प्रश्न के दो पार्ट हैं–

अध्यापकों की सहायता से वस्तुओं का निर्माण करते हैं?

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	180	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	180	
हाँ	120	66.66%
नहीं	60	33.33%

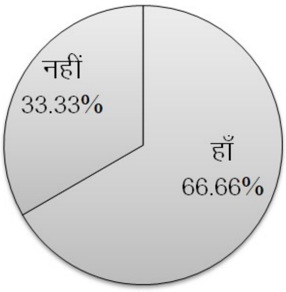

व्याख्या

(i) इस प्रश्न में कुल 180 छात्र हैं क्योंकि 200 में से 180 छात्रों को चार्ट/मॉडल/खिलौने बनाने के अवसर प्राप्त होते हैं। इसलिए 180 में से 120 छात्र अर्थात् 66.66% अध्यापकों की सहायता से वस्तुओं का निर्माण करते हैं।

(ii) जबकि शेष 33.33 छात्र वस्तुओं का निर्माण स्वयं कुशलता पूर्वक करते हैं।

प्रश्न–19–प्रयोगशाला में कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	190	95%
नहीं	10	5%

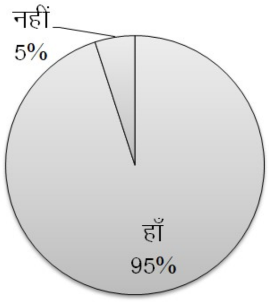

व्याख्या

प्रयोगशाला में 95% छात्रों को कार्य करने का अवसर प्राप्त हैं।

(i) प्रयोग की विधियों का सही प्रकार अनुकरण करने में सक्षम होते हैं। इसके हाँ में 190 में से 100 छात्र प्रयोग की विधियों का सही प्रकार अनुकरण करने में सक्षम होते हैं।

(ii) जबकि प्रयोग करते समय प्रयुक्त उपकरणों का उपयोग कुशलतापूर्वक 190 में से 90 छात्र अर्थात् 46% ही कर पाते हैं।

प्रश्न–20–संगीत सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

प्राप्त परिणाम

छात्र संख्या	200	प्रतिशत (%)
प्राप्त मत	200	
हाँ	160	80%
नहीं	40	20%

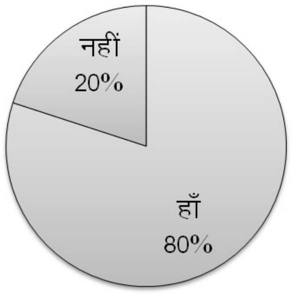

व्याख्या– पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत 160 छात्रों 80% को संगीत सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

(i) जिनमें 80 छात्र 50% स्वयं गायन करने में सक्षम है।

(ii) 40 छात्र 31.25% छात्र वाद्ययंत्रों की कार्य प्रणाली से परिचित हैं।

50 छात्र 31.25 छात्र वाद्ययंत्र कुशलता पूर्वक बजा सकते हैं।

निष्कर्ष

किसी भी शोध अध्ययन के सम्पूर्ण होने पर निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता के सामने कुछ परिणाम निष्कर्ष के रूप में निकलकर आते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में निम्न तथ्य प्राप्त हुये हैं–

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों की ज्ञानात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के छात्रों की मनोगत्यात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति माध्यमिक स्तर के छात्रों की अभिवृत्ति सकारात्मक पाई गयी।
4. माध्यमिक स्तर पर आयोजित की जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति छात्रों ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये जो उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में प्राप्त तथ्यों का शैक्षिक निहितार्थ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारद्वाज दिनेश चन्द, विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा।
2. कुदेशिया डॉ. उमेश चन्द, शिक्षा प्रशासन।
3. सचदेवा एम.एन., स्कूल प्रबन्ध एवं प्रशासन।
4. जीत भाई योगेन्द्र, हिन्दी भाषा शिक्षण।
5. जीत भाई योगेन्द्र, विद्यालय प्रशासन।
6. आर्य पाल मोर्ट, प्रिंसिपल ऑफ स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन।
7. कोचर एस.के., सैकेण्डरी स्कूल एडमिनिट्रेशन।
8. सुखिया एस.पी., विद्यालय प्रशासन एवं संगठन।
9. गर्ग शोभा, शिक्षा प्रशासन एवं पर्यवेक्षण।
10. वर्मा रामपाल, विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा।
11. शर्मा डॉ. संदीप, शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्धन।
12. भटनागर डॉ. आर.पी., शिक्षा अनुसंधान।
13. शर्मा डॉ. आर.ए., शिक्षा अनुसंधान।

***Corresponding Author**

डॉ. उषा शर्मा, *सहायक प्रोफेसर*

एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण

महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर

Email- ushasharma575@gmail.com, Mobile -7726847409